Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVII, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

मैथिलीशरण गुप्त और साकेत

डॉ. श्रीमती बिन्दू परस्ते*

* सहायक प्राध्यापक (हिन्दी) प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस श्री अटल बिहारी वाजपेयी, शा. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – मैथिलीशरण गुप्त हृदय से भक्त थे और स्वाभाव से उदार, विनम्र और मिलनसार साहित्य साधन के पवित्र कर्म में वे निरंतर संलग्न रहे। अपने जीवन के आदर्श उन्होंने भगवान राम, भगवान बुद्ध और महात्मा गांधी जी से ग्रहण किए थे। गुप्त जी की रचनाओं से ऐसा प्रतीत होता है कि आप राम के अनन्य भक्त हैं। 'साकेत' में तो राम का स्तवन है ही पर जो ग्रंथ कृष्ण के चरित्र का महाभारत की घटनाओं से संबंधित है वहां भी मंगल चरण में राम ही की वंदना है जैसे वक्त संहार में परन्तु मैथिलीशरण गुप्त जी की यह खासियत है कि उन जैसा उदार और विशाल हृदय व्यक्ति चिराग लेकर ढूंढने से भी नहीं मिलेगा। जिस लेखनी में 'पंचवटी' और साकेत का निर्माण किया उसी ने पौधों की करुणा का उद्घोष करने के लिए अवध–यशोधरा और कुणाल गीत' की रचना की, उसी ने मुसलमानों के चरित्र की महानता और सहनशीलता को अंकित करने के लिए हृदय को हिलाने वाली कर्बला की कहानी हमें सुनाई। दरअसल में मानवता के गायक थे। धर्मनिरपेक्षता और सहिष्णुता का मूल्य उनकी रग –रग में समाहित था। 'विश्व वेदना' की रचना उन्होंने धर्म और राष्ट्रीय भावना से ऊपर उठकर विश्व बंधुत्व का गीत गाने के लिए की।

गुप्त जी हमारे देश और युग के प्रतिनिधि कवि हैं। हमारा देश अखंड है और उसे अखंडता की भावना गुप्त जी ने दी है। उनमें राजनीतिक विचार अनके गुणों विशेष रूप से 'भारत– भारती' और स्वदेश संगीत में बिखरे पड़े हैं। राजनीति में मैथिलीशरण गुप्त ने महात्मा गांधी के सिद्धांतों का प्रचार किया है। सन 1921 से 1947 तक महात्मा गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस जिस मार्ग पर चली है उन समस्त आंदोलन की ध्वनि उनके काव्य में पाई जाती है।

मैथिलीशरण गुप्त ने 20 से ऊपर सफल प्रबंध काव्य रचे हैं उनमें 'जयभारत' और 'साकेत' दोनों हिंदी महाकाव्यों की परम्परा में बहुत उंचा ध्यान रखते हैं। 'यशोधरा' की उनकी बड़ी ही लोकप्रिय रचना है। ऐसी ही मार्मिक कृतियां 'विष्णुप्रिया' और 'रत्नावली' है। उनके खंडकाव्यों में जयद्रथ वध, पंचवटी और 'नहुष' की गणना निश्चित ही सफल कृतियों में होगी। इन सभी काव्य ग्रंथों में कुल मिलाकर कई ऐसे मार्मिक स्थल हैं जहां पांडवों का हृदय बार–बार अभिभूत होता है।

मैथिली शरण गुप्त हिंदी साहित्य, भारतीय समाज और इतिहास के द्विवेदी युग के कवि हैं और कोई भी कवि या साहित्यकार अपने युग के असंप्रक्त रहकर नहीं लिख सकता। अत: गुप्त जी की रचनाएं भी युग सापेक्ष संवेदना और वस्तु को लिए हुए हैं। उनका युग सुधार और इतिहास वृत्तात्मक संवेदना का युग है। अत: गुप्त जी के साहित्य में भी यह प्रवृत्ति और संवेदना उभर कर सामने आती है। कवि ने पौराणिक राम कथा में कुछ स्थलों को लेकर उनकें आधार पर साकेत के कथानक की रचना की। कुछ परंपरागत विद्धानों ने साकेत की विशेषता को अद्धैत के रूप में प्रस्तुत किया है कि गुप्त जी ने साकेत में राम रामायण के परित्यक्त, विस्तृत एवं उपेक्षित प्रसंग व पात्रों को ही प्रवास में लाने का प्रयास किया है। कथाकथित विद्धानों का आक्षेप युगीन प्रभाव और कवि की समसामयिक प्रतिवद्धता की ओर संकेत करता है। विद्धानों का यह भी कहना है कि एक और कवि ने संपूर्ण राम–कथा भी कह देनी चाहि और दूसरी ओर उपेक्षित स्थलों तथा पात्रों को भी उभरने की चेष्टा की है। यह भारत के इतिहास का वह समय था जब उपेक्षित इंसानों को राष्ट्र की मुख्य धारा में लाने के लिए पूरे देश संघर्ष कर रहा था और गांधी जी ने इसका नेतृत्व कर रहे थे, तब एक राष्ट्रकवि का दायित्व इस संवेदना और समय की आवश्यकता को अभिव्यक्त करना था ना की राम कथा को पुनर्जीवित करना।

जब तुलसीदास जी ने वाल्मीकि रामायण में परिवर्तन करके अपने युगीन प्रभावों और संवेदनाओं को अपने रामचरितमानस का विषय बनाया तो उन पर यह आंक्षेप नहीं लगा। दरअसल रामायण और राम कथा को रूढ़ मनोवृति से देखने पर इस तरह के आक्षेप जन्म लेते हैं। राम का चरित्र विकासथील है और वह निराला और दुष्यंत कुमार तक विकसित होता रहा है। राम युग नायक हैं तो हर युग में उनके नायकतत्व तभी कायम रह सकता है जबकि हम उसे समय की आवश्यकता अनुसार विकसित और परिवर्तित करें। मैथिली शरण ने भी यही किया था। राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के आम उपेक्षित जनता की व्यापक भागीदारी आवश्यक थी। उसे वैधता देने के लिए पौराणिक आधार देना आवश्यक था।

प्राचीन साहित्य परंपरा के अनुसार गुप्त जी ने भी साकेत के प्रथम सर्ग को देवी शारदा की स्तुति से आरंभ किया है। इसके बाद अयोध्या नगरी की भव्यता का वर्णन किया है। यहां के राजा दशरथ हैं। राजा और प्रजा का पारंपरिक संबंध सौमनस्य एवं सद्भाव का है। उनके चार पुत्र भगवान राम, लक्ष्मण और भरत, शत्रुघ्न हैं। उनकी एकमात्र अभिलाषा थी राम के शीघ्र – अतिशीघ्र राज्याभिषेक की है। द्वितीय सर्ग में मंथरा– केकयी का प्रसंग एवं राजा दशरथ के वरदान का प्रसंग है। राम के राज्याभिषेक की सूचना से पूरा वातावरण हर्षोल्लासमय है। परंतु दासी मंथरा खुश नहीं है वह केकयी को दो वचनों की याद दिलाती हैं और दो वर राजा से मांगने को कहती है। केकयी कोप भवन में क्रोध करते हुए राजा दशरथ से भरत को राजा बनाने और

भगवान राम को 14 वर्ष वन में रहने का वर मांगती है। जिससे राजा दशरथ अपने प्राण चुका कर भी देना पड़ता है। तृतीय सर्ग में भगवान राम को पता चल जाता है और वह सहर्ष वनवास जाने को तैयार हो जाते हैं परंतु लक्ष्मण अत्यंत क्रोधित होते हैं परंतु भगवान राम उन्हें समझाते हैं। परंतु लक्ष्मण उनके साथ वन में जाने के लिए तैयार रहते हैं। चौथे स्वर्ग में माता कौशल्या से वन जाने की आज्ञा लेने भगवान राम लक्ष्मण और माता सीता पहुंचते हैं। लक्ष्मण जी माता सुमित्रा और माता कौशल्या दोनों से आज्ञा लेकर वन जाने की अनुमति लेते हैं। साकेत का यह प्रसंग अत्यंत मार्मिक है क्योंकि यहां पर उर्मिला की स्थिति अत्यंत करूण एवं उपेक्षित है। लक्ष्मण अपने भाई- भाभी की सेवा के लिए अपनी पत्नी को छोड़कर जा रहे हैं। गुप्त जी यहां पत्नी को हाड़-मॉस युक्त चित्रित करते हैं ना कि त्याग और समर्पण की देवी वह पति से कुछ कह नहीं पाती है परंतु कर्तव्य की महत्ता उसे महान बना देती है। और वह अपनी भावनाओं को अपने अंदर ही दफन कर देती है और अपने मन को समझती है।

हे मन,
तु प्रिय पथ का विहङ्ग न वन

उर्मिला देखती है कि सीता राम के साथ वाद-विवाद और तर्क-वितर्क करने जीत गई उन्हें साथ चलने की अनुमति मिल गई। उर्मिला भी उसी सीता की बहिन है, उर्मिला भी पति के लिए राजवैभव को ठुकराकर वन में जीवन बिता सकती है। वह जानती है कि यदि वह साथ चलने की जिद करेगी तो भी श्री लक्षण नहीं ले जाएंगे। यदि वह जिद करेगी तो लक्ष्मण को भी जाने दिया जाएगा। इसलिए उर्मिला ने स्वयं तय कर लिया और साथ चलने की बात नहीं कि। इससें युग-युग से उपेक्षित उर्मिला की महानता कवि ने अत्यंत समृद्धता से अंकित की है। पंचम सर्ग में राम जी लक्ष्मण जी और सीता जी रथ पर चढ़कर वन की और प्रस्थान करते हैं। सष्ठम सर्ग में सुमन्त साथ भगवान राम को वापस न पाकर राजा दशरथ जी भी चल बसे हैं।

सप्तम सर्ग में भरत शत्रुघ्न अपने ननिहाल से वापस अयोध्या आ रहे हैं। अष्टम स्वर्ग में चित्रकूट का दृश्य है भरत- शत्रुघ्न अपने बड़े भाई भगवान राम को वापस लाने मनाने जाते हैं। परंतु भगवान राम द्वारा वचन निभाने की प्रतिज्ञा के कारण वह भगवान राम के खड़ाऊ सिर पर रखकर लौट आते हैं। पिता के जाने का समाचार से भगवान राम, लक्ष्मण, माता सीता शोकाकुल हो जाते हैं। नवन एवं दशाम सर्ग में कवि के विविध छन्दों में उसके अंदर की पीड़ा और आंसुओं को भी अभिव्यक्त किया है। एकादश सर्ग में हनुमान जी संजीवनी लेकर जाते देखे जाते है भरत जी उन्हें घायल कर देते हैं तब हनुमान जी उन्हें बताते हैं कि युद्ध के दौरान लक्ष्मण जी को शक्तिवान लगने से वे मूर्छित हैं उनके लिए वह संजीवनी बूटी लेकर जा रहा हूँ। द्वादश सर्ग लंका में लक्ष्मण जी संजीवनी बूटी खाकर स्वस्थ हो जाते हैं और मेघनाथ का वध करते हैं तत्पश्चात भगवान राम रावण का वध करते हैं। गुप्त जी साकेत वासियो को आज्ञा देते हैं कि भगवान राम, लक्ष्मण और सीता जी के स्वागत के लिए नगर को सजाया जाता है। राम भरत का मिलाप होता है। भगवान राम अयोध्या आते हैं। माताएं अपने पुत्रों का हर्ष मग्न हो स्वागत करती है। सीता जी अपनी बहनों से मिलकर प्रफुल्लित होती है। सखी उर्मिला से इस सुअवसर पर नूतन वस्त्र धारण कर प्रिय का स्वागत करने को कहती है परंतु उर्मिला रहती है -

नहीं नहीं प्रणेश मुझ से छले ना जावे
मैं जैसी हूं नाथ मुझे वैसा ही पावे

उर्मिला को अपनी यौवन की खिल-खिल करती बेला के चले जाने पर सन्ताप है कि किंतु तभी लक्ष्मण आते हैं और अपनें धीर -गम्भीर स्वर में समझते हैं

वह वर्षा की बाढ़ गई उनको जाने दो, रुचि गंभीरता लिये शरद की यह आने दो।

इस तरह कर्तव्य और प्रेम में जीवन की सार्थकता को तलाशती हैं साकेत की कथा एक ओर राष्ट्रीय मुक्ति का दायित्व है तो दूसरी ओर व्यक्तिगत जीवन के सुख को भोगने की लालसा। यही मूल उद्देश्य है इस कथा का जिसमें कवि सफल हुआ है। इस तरह एक लंबे अंतराल के बाद युगल - दंपति का मिलन होता है और साकेत की कथा का अंत होता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. आधुनिक काव्य - डॉ. संजीव कुमार जैन
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ. नाग्रेन्द्र
3. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास- डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त

****